• बाल कविता...

चलो, मनाएं हम भी पिकनिक...

नदी किनारे रामबाग है,
रामबाग है हरा-भरा,
फूलों की घाटी है सुंदर
जैसे जादू वहां भरा।
जल्दी चलो, करो तैयारी,
नहीं चलेगी मम्मी, झिक-झिक!
पापा जी भी संग चलेंगे
छुट्टी है, प्यारा इतवार,
दीदी ले लो टेप-रिकार्डर
डांस करूंगा मैं इस बार।
पप्पू घोड़ा बन जाएगा,
फिर दौड़ेगा वह तो तिक-तिक!
खाना-पीना, उछल-कूद भी
मौसम प्यारा-प्यारा है,
आज मनेगी सबकी पिकनिक
यह आदेश हमारा है!
खूब कहकहे आज लगेंगे,
जो रूठेगा, उसको धिक-धिक!

-प्रकाश मनु

• चुटकुले...

छोटी – सी लड़की ने अपनी मां से पूछा – मम्मी , तुमने कहा था ना कि परियों के पंख होते हैं और वह उड़ सकती हैं ना?
मम्मी – हां बेटी, कहा था।
लड़की – कल रात डैडी आया को कह रहे थे कि वह तो परी हैं। वह कब उड़ेगी मम्मी?
मम्मी (छोटी सी लड़की से) – सुबह होते ही उड़ जाएगी बेटी।

बच्चा – पापा–पापा, मुझे पेंसिल नहीं पेन दिलाओ ना।
पिता – लेकिन तुम्हें मेम पेंसिल से लिखने की बोलती है।
बच्चा – हां, पर बच्चों को मारते वक्त पेंसिल की नोंक हमेशा टूट जाती है।

पिता ने बेटे से पूछा – लगता है, मेरे ब्रश से तुमने दांत साफ किए है, तभी तो इससे इतनी बदबू आ रही है।
बेटा बोला – नहीं पिताजी! इससे तो मैंने अपने कुत्ते के दात्त साफ किए थे।

• आप जानते हैं...

खूबसूरत शहर...

हम आपको कुछ ऐसे शहरों के बारे में बताने जा रहे हैं, जो दुनिया के सबसे खूबसूरत शहरों में शुमार हैं। आइए बताते हैं उन जगहों के बारे में।

पेरिस : पेरिस को रोमांस के शहर नाम से भी जाना जाता है। इसे सिटी ऑफ लव भी कहा जाता है। इसके अलावा यहां की शान एफिल टावर जरूर देखें। एफिल टावर का निर्माण 1889 में हुआ था। इस लोहे के टावर की ऊंचाई 300 मीटर है। इस टावर के सबसे ऊपरी माले पर पहुंचने के लिए आपको करीब 1,665 सीढ़ियां चढ़नी होंगी।

रोम : दुनिया के एक और खूबसूरत शहरों में शुमार है इटली का रोम शहर। ये दुनियाभर में अपने सर्वश्रेष्ठ वास्तुशिल्प के लिए जाना जाता है। रोम को फैशन, रोमन फूड और सिनेमा का शहर माना जाता है। यह दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों में से एक है। इसे यूरोप का सबसे जीवंत शहर भी कहा जाता है।

वेनिस : रोमांटिक शहरों की बात हो और वेनिस शहर का नाम न आए। ये कैसे हो सकता है? पानी पर तैरने वाला इस शहर की खूबसूरती शब्दों में बयां कर पाना बेहद मुश्किल है। अपनी नैसर्गिक खूबसूरती, प्राकृतिक छटा और ऐतिहासिकता के चलते यह शहर दुनिया के दूसरे शहरों से एकदम अलग है। यह शहर अपनी सांस्कृतिक विरासत के लिए भी जाना जाता है। इस शहर में आपको सड़कें कम, नहरें ज्यादा दिखेंगी।

बुडापेस्ट : हंगरी की राजधानी बुडापेस्ट काफी खूबसूरत जगह है। इसे डोनाउ की रानी भी कहा जाता है। यहां आपको शाही महल और बड़ी संख्या में 19वीं सदी के बरोक और गोथिक स्मारकों को देखने का मौका मिलेगा। यहां पर सबसे ज्यादा रोमांटिक गलियां हैं जिन्हें आप कभी भुला नहीं पाएंगे।

सिडनी : ऑस्ट्रेलिया का दूसरा सबसे बड़ा शहर सिडनी है। यहां आपको सफेद रेत देखने को मिलेगी। वही यहां ओपेरा हाउस भी काफी प्रसिद्ध है। आपको मिश्रित सभ्यता का एक बड़ा उदाहरण भी देखने को मिलेगा।

• लोक-कथा

दुर्भावना का फल...

गतांक से आगे...

उसने महर्षि से क्षमा मांगते हुए कहा, गुरुवर क्षमा करें, कहीं कुछ समझने में भूल हो गई। जमींदार स्वयं आते, पर हवेली मेहमानों से भरी है इसलिए नहीं आ पाए। आप शिष्यों को पुनः भेज दें। मैं उन्हें लेने आया हूं बिना शिष्यों को भोजन कराए अन्य मेहमानों को भोजन नही परोसा जाएगा।

महर्षि ने इस बार दूसरे दो शिष्यों सुवास और नवीन को संदेशवाहक के साथ भेजा। वे दोनों जमींदार के यहां पहुंचे तो जमींदार ने उनसे भी बारी-बारी कुएं पर जाकर हाथ-पैर धोने के लिए कहा। पहले नवीन कुएं की ओर गया। सुवास को अकेला देखकर जमींदार ने वही बात फिर कही, सुना है कि वे जो कुएं की ओर गए हैं, गुरुकुल में सबसे श्रेष्ठ और बहुत विद्वान हैं।

सुवास ने कहा, आपने ठीक सुना है। गुरुकुल में रहकर गुरुवर से हमें रोज अच्छी बातें सीखने को मिलती हैं।

जमींदार ने फिर पूछा, आपने यह नहीं बताया कि आप दोनों में श्रेष्ठ कौन है?

श्रेष्ठ तो नवीन है, सुवास ने बेहिचक कहा।

और आप? जमींदार ने पुनः पूछा।

मैं तो उसके सामने कुछ भी नहीं हूं, सुवास ने उत्तर दिया।

तभी नवीन लौटा और सुवास कुएं की ओर गया। जमींदार ने वही प्रश्न नवीन से किया। नवीन ने उत्तर दिया, सुवास तो सूर्य है, मैं तो उसकी विद्वता के सामने एक दीपक भर हूं।

जमींदार उनके उत्तर से संतुष्ट हुए और दोनों का यथोचित सत्कार किया। दक्षिणा में उन्हें पांच-पांच गायें, पुरस्कार स्वरूप चांदी की खड़ाऊं भेंट कीं। वे दोनों जब गुरुकुल लौटे तो बहुत प्रसन्न थे।

यह देखकर विभूति और दक्षेस का क्रोध और बढ़ गया। वे महर्षि के पास पहुंचे और कहा, हम दोनों आपके इन शिष्यों से अधिक बुद्धिमान हैं फिर भी हम अपमानित हुए। आप सब जानकर भी चुप हैं और नवीन एवं सुवास की प्रशंसा कर रहे हैं।

गुरु महर्षि ने उत्तर दिया, यह तो जमींदार ही बता सकते हैं।

तो आप चलकर उनसे पूछते क्यों नहीं? दक्षेस ने हठ किया। महर्षि अनमने से चारों शिष्यों को साथ लेकर चल पड़े। जमींदार ने दौड़कर गुरु की अगवानी की और चारों शिष्यों को आसन दिया।

महर्षि ने आने का कारण बताते हुए कहा, वत्स, आपने शिष्यों के साथ भेदभाव क्यों किया? दक्षेस और विभूति का कहना है कि उनका अपमान हुआ है। आपको इसका उचित कारण बताना ही होगा अन्यथा...!

जमींदार ने गंभीर स्वर में कहा, महर्षि, मैंने आपसे दो सुयोग्य विद्वान भेजने का आग्रह किया था। पर आपने मेरे यहां बैल और खच्चर भेज दिए। जब मैंने आपके पहले भेजे हुए शिष्यों से प्रश्न पूछा तो इन्होंने एक-दूसरे का यही परिचय दिया। अतः मैंने दोनों के लिए जानवरों वाले प्रिय भोजन परोसे। मुझसे कोई भूल हो गई हो तो मैं क्षमा...!

जमींदार की बात खत्म होने से पहले विभूति और दक्षेस का सिर शर्म से झुक गया। उन्हें अपनी भूल महसूस हुई, उन्होंने जमींदार से क्षमा मांगी।

तब गुरु महर्षि ने कहा, अहंकार और ईर्ष्या के कारण तुम दोनों में प्रेम नहीं है, पारस्परिक सदभाव नहीं है। इसी कारण तुम दोनों योग्य होकर भी अयोग्य सिद्ध हुए और सभा में अपमानित हुए। वहीं सुवास और नवीन तुम दोनों की अपेक्षा कम योग्य हैं पर वे विनम्र, शिष्ट और एक-दूसरे के प्रति मित्रता का भाव रखते हैं। इसी कारण आज यहां सम्मानित हुए। सबकी भावना की कद्र करना, सबसे प्रेम करना और सबका सम्मान करना ही शिष्य को योग्य बनाता है।

इसे सुनकर वहां उपस्थित लोगों ने गुरु की प्रशंसा की और गुरु को यह विश्वास हो गया कि अब उनके चारों शिष्य एक समान योग्य होकर घर लौटेंगे।

-समाप्त

महर्षि ने इस बार दूसरे दो शिष्यों सुवास और नवीन को संदेशवाहक के साथ भेजा। वे दोनों जमींदार के यहां पहुंचे तो जमींदार ने उनसे भी बारी-बारी कुएं पर जाकर हाथ-पैर धोने के लिए कहा।

पहले नवीन कुएं की ओर गया। सुवास को अकेला देखकर जमींदार ने वही बात फिर कही, सुना है कि वे जो कुएं की ओर गए हैं, गुरुकुल में सबसे श्रेष्ठ और बहुत विद्वान हैं...

• जानकारी...

स्ट्रेच स्पाइडर...

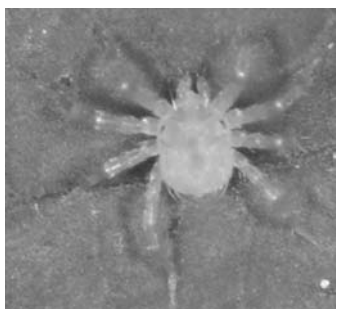

***ग्रीस में** एक ऐसा शहर है जिसे मकड़ी ने अपने जाल से कब्जा कर लिया है। इस शहर में मकड़ों ने हर तरफ जाले बुन दिए हैं। मकड़ों का कब्जा इतना ज्यादा है कि पेड़-पौधे, झाड़ियां तक इनके बुने जाले से ढंक गए हैं।*

ऐसा कहते है कि ये मौसमी मकड़ियां एक तरह के मच्छरों के कारण फैल रहे हैं जो उनका पसंदीदा भोजन हैं। ठंड का मौसम आते ही ये मच्छर कम हो जाते हैं, और उसके साथ ही इन मकडियों की संख्या भी कम हो जाती है।

ये एक खास किस्म के सफेद मकड़ियों का कारनामा है, जिनका नाम टैरानगाथा जीनस बताया जा रहा है। ये बेहद हलके और छोटे होते हैं, इसलिए जमीन से ज्यादा पानी में तेजी से चलते हैं। वैसे ये भी बताया गया कि ये मकड़ी इंसानों के लिए हानिकारक नहीं होते हैं। इनकी खासियत है कि ये अपने शरीर को खींच कर लंबा कर सकते हैं इसीलिए इन्हें स्ट्रेच स्पाइडर भी कहते हैं।

• मौत का आइलैंड...

इटली के प्रोवेग्लिया आइलैंड को मौत का आइलैंड भी कहा जाता है। माना जाता है कि इस आइलैंड पर जाने वाले लोग लौटकर वापस नहीं आ पाते। कहते हैं कि सैकड़ों साल पहले यहां लगभग एक लाख 60 हजार बीमार लोगों को जिंदा जला दिया गया था। तब से यह आइलैंड पूरी तरह से वीरान हो गया। इसे लोग भूतहा आइलैंड भी मानते हैं।